Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **16.01.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

दरूद शरीफ़ जो सुदृढ़ता प्राप्त करने का एक व्यापक साधन है, अधिकांशतः पढ़ो, न कि रस्म और आदत के तौर पर बल्कि रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्दरता एंव एहसान को सम्मुख रख कर तथा आपके उच्च स्तर और प्रतिष्ठा की उन्नति के लिए तथा आपकी सफलताओं के लिए। इसका परिणाम यह होगा कि दुआ की क़बूलियत का मीठा एंव स्वादिष्ट फल तुमको मिलेगा।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई-

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا○ निःसन्देह अल्लाह तथा उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं, ऐ वे लोगो, जो ईमान लाए हो तुम भी उस पर दरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो। यह आयत स्पष्ट करती है कि अल्लाह तआला अपने नबी पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा रहा है, उसके फ़रिश्ते भी नबी सलल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुआएं दे रहे हैं, उसके लिए रहमत मांग रहे हैं। अतः जब इस प्रकार की परिस्थिति है तो वे लोग जो विभिन्न चालबाज़ियां एंव चालाकियां प्रयोग करके उस नबी सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सफलता को रोकना अथवा कम करना चाहते हैं वे कभी सफल नहीं हो सकते। जो लोग आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अनुचित आरोप लगाते हैं तथा हंसी एंव उपहास का निशाना बना कर समझते हैं कि हम सफल हो जाएंगे, वे मूर्खों की जन्नत में रहते हैं उनकी ये साज़िशें एंव प्रयास अल्लाह तआला के उस प्यारे नबी सलल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई हानि नहीं पहुंचा सकतीं। जिस उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा है उसकी प्राप्ति अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से होती चली जाएगी और इस ज़माने में तो इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अल्लाह तआला ने आपके सच्चे आशिक़ को भेज कर इसलाम की सुन्दर शिक्षा को फैलाने के लिए नए मार्ग खोल दिए हैं।

अतः आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिनको अल्लाह तआला ने हर ज़माने तथा हर एक क़ौम के लिए नबी बनाकर भेजा है उसकी सहायता के सामान भी अल्लाह तआला अपनी रहमत और फ़ज़्ल से स्वंय फ़रमा रहा है। आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोधी न कभी पहले सफल हो सके, न अब सफल हो सकते हैं। यह तो अल्लाह का फ़ैसला है। इस लिए इसकी तो एक वास्तविक मुसलमान को चिंता ही नहीं होनी चाहिए कि इसलाम को अथवा आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा को कोई सांसारिक कोशिश हानि पहुंचा सकती है। हाँ, जो काम अल्लाह तआला ने वास्तविक मुसलमान का दायित्व बताया है वह यह है कि जिस प्रकार वह और उसके फ़रिश्ते उस नबी की प्रतिष्ठा को ऊँचा करने के लिए उस पर रहमत भेज रहे हैं। तुम अपना कर्तव्य निभाते हुए अल्लाह तआला के प्यारे सम्पूर्ण तथा अन्तिम नबी पर दरूद और सलाम भेजो। अतः यह कर्तव्य है जो एक वास्तविक मुसलमान का है। उन नबी के काम को उन्नति देते चले जाने वालों में शामिल होकर अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्तों की बात के पीछे चलते हुए अत्यधिक दरूद और सलाम, हम आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भेजें।

पिछले दिनों फ्रांस में जो परिस्थितियां बनीं और मुसलमान कहलाने वालों ने एक अख़बार के दफ़्तर पर हमला करके जो बारह आदमियों को मार दिया, उसके बारे में संक्षिप्त विवरण के साथ पिछले जुमा को मैं ने अहमदयों को, जमाअत के लोगों को दरूद पढ़ने की ओर ध्यान दिलाया था कि हिंसा के द्वारा इसलाम की विजय नहीं होगी बल्कि आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने से हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे। और इस चिंता को जी मैं ने अभिव्यक्त किया था कि इस हमले की प्रतिक्रिया में अनुचित कृत्य दिखाया जा सकता है या दिखाया जाएगा और यही आशा उन लोगों से की जा सकती है। ग़लत प्रतिक्रिया दिखाकर उन लोगों ने भी दोबारा रेखा-चित्र प्रकाशित किए जो फिर से हमारे लिए कष्ट दायक बने और प्रत्येक वास्तविक मुसलमान के लिए कष्ट का कारण बनने चाहिएं थे।

अतः इस कार्य ने दुनिया के अनेक देशों में न केवल इसलाम की शिक्षा के अनुचित प्रभाव को हवा दी है बल्कि मरते दुश्मन को जीवित करने की भूमिका निभाई है। काश! कि मुसलमान संगठन जो इसलाम के नाम पर अत्याचार करते हैं, समझें कि इसलाम की प्यार व मुहब्बत की शिक्षा अधिक तेज़ी के साथ दुनिया को इसलाम की गोद में ला सकती है। इसलाम, जिस प्रकार संतोष एंव साहस की शिक्षा देता है उसका कोई अन्य धर्म मुक़ाबला ही नहीं कर सकता। ये सांसारिक लोग तो वे लोग हैं जिनकी दीन की आँख अन्धी है जो अल्लाह तआला के नबियों की बात तो एक ओर, ख़ुदा तआला का उपहास करने से भी नहीं रुकते। इन मूर्खों के कृत्यों के कारण यदि हमारी ओर से भी मूर्खों वाली प्रतिक्रिया हो तो ये ज़िद में आकर अधिक अमानुषता की बातें करेंगे। अतः एक वास्तविक मुसलमान को इससे बचना चाहिए। मामला ख़ुदा

तआला पर छोड़ना चाहिए। ख़ुदा तआला ने यही फ़रमाया है कि जब मेरे पास लौटना है तब इन कर्मों का परिणाम उन्हें भुगतना होगा। अन्ततः एक दिन अल्लाह तआला की ओर लौटना है तब वह उन्हें बता देगा कि वे क्या करते रहे हैं। आजकल, शत्रु इसलाम के विरुद्ध तलवार उठाने के बजाए ऐसे ही घटिया षडयन्त्रों को रच कर इसलाम और इसलाम की शिक्षा तथा आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम को हानि पहुंचाना चाहते हैं। अल्लाह तआला ने यह कह कर कि अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं, एक मूल सिद्धांत बता दिया है कि ये हरकतें नबी सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा को कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकतीं। पोप ने बड़ा अच्छा बयान दिया है कि विचारों की अभिव्यक्ति की कोई सीमा होनी चाहिए। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि खुली छूट दे दी जाए। उन्होंने कहा कि हर धर्म की एक प्रतिष्ठा है उसका सज्ञान आवश्यक है और किसी भी धर्म की मर्यादा पर हमला नहीं करना चाहिए।

आजकल मीडिया दुनिया पर छाया हुआ है और कहीं भी आग लगाने या आग बुझाने, उपद्रव करने अथवा उपद्रव को रोकने में बड़ी भूमिका निभाता है। अब की बार यह पहला अवसर है कि इस घटना के बाद यू के तथा विश्व के विज़िन्न मीडिया ने जमाअत से भी, हमारी प्रतिक्रिया तथा दृष्टि कोण इस विषय में पूछा, जिसमें हमने इस हत्या के बारे में बताया कि ये अधर्म है तथा हमें इस पर खेद है परन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की भी कोई सीमा होनी चाहिए अन्था विश्व में फ़साद पैदा करने के उत्तरदायी वे लोग होंगे जो दूसरों की भावनाओं को भड़काते हैं।

अतः इसके अतिरिक्त कुछ बातें बयान हुई हैं प्रेस में, यू के में स्काई न्यूज़, न्यूज़ 5, बी बी रेडियो, एल बी सी, बी बी सी लीडज़ तथा लंदन लाइव। फिर बाहर के टी वी हैं, फ़ाक्स टी वी है, सी एन एन है, कैनेडा के समाचार पत्र हैं। इसी प्रकार यूनान, आयर लैंड, फ्रांस तथा अमरीका के विभिन्न समाचार पत्र हैं, उन्होंने हमारा दृष्टि कोण बयान किया। इन्टर व्यू उनके स्टूडियोज़ में जाकर भी हुए और इसके द्वारा कई मिलयन लोगों तक इसलाम का वास्तविक दृष्टि कोण एंव शिक्षा पहुंची। यह तो अल्लाह तआला का विधान है कि इसलाम की शिक्षा का वास्तविक चेहरा अब आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ की जमाअत ने दुनिया को बताना है, जो आपसे सीखा। अतः हमारा यह कर्तव्य है कि, जैसा कि मैं ने पिछले ख़ुत्बे में भी कहा था कि अपने अपने क्षेत्र में दुनिया को यह सन्देश दें तथा समझाएं कि अनुचित प्रतिक्रिया केवल फ़साद उत्पन्न करेगी इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं होगा। और वर्तमान स्थिति में जो हालात हैं दुनिया में, उनमें फिर भड़क कर एक आग लग जाएगी और यह आग फिर चारों ओर आग ही आग बन जाऐगी जिसको विश्व इस समय सहन नहीं कर सकता।

अतः अनुचित प्रतिक्रिया के द्वारा लोगों को न भड़काओ, न अल्लाह तआला की पकड़ को आवाज़ दो। ख़ुदा तआला दुनिया को बुद्धि प्रदान करे। लेकिन एक अहमदी का एक बड़ा काम इसके साथ उस मार्ग पर चलना भी है जो ख़ुदा तआला ने हमें बताया है कि يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○ ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो, तुम भी उस नबी पर दरूद और सलाम एक जोश के साथ भेजो। यद्यपि अल्लाह तआला के आदेशानुसार एक वास्तविक मोमिन को अपने सामर्थ्यानुसार काम करने का प्रयास करना चाहिए। अतः इस संदर्भ में इस समय कुछ हदीसें तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ अवतरण पेश करूंगा जो दरूद शरीफ़ के महत्व तथा उसके लाभों को भी स्पष्ट करते हैं। हम आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का दावा करते हैं तथा इस मुहब्बत के कारण हमारे दिल उस समय छलनी होते हैं जब आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कुछ अपशब्द कहे जाएं अथवा किसी भी प्रकार, अनुचित रंग में आपके सज्रंध में कोई बात कही जाए। परन्तु इस मुहब्बत का वास्तविक रूप तथा इसका लाभ किस प्रकार होगा? इसके विषय में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का कथन है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोगों में से मेरे अधिक निकट वह व्यक्ति होगा जो उनमें से मुझ पर सबसे अधिक दरूद भेजने वाला होगा। अतः आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से वास्तविक मुहब्बत की अभिव्यक्ति जिस के फलस्वरूप आपकी निकटता मिले, दरूद शरीफ़ पढ़ने से ही है।

फिर हज़रत अनस रज़ी0 से रिवायत है कि आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन उस दिन की कठिनाइयों से तथा भयानक अवसरों से तुममें से सबसे अधिक वह व्यक्ति सुरक्षित तथा मुक्त होगा जो दुनिया में मुझ पर सबसे अधिक दरूद भेजने वाला होगा। फ़रमाया कि मेरे लिए तो अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्तों का दरूद ही पर्याप्त था यह तो अल्लाह तआला ने मोमिनों को सवाब पाने का एक अवसर प्रदान किया है कि तुम दरूद भेजो। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरू बिन आस का कथन है। उन्होंने नबी करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी फ़रमाते हुए सुना कि जब तुम मुअज़्ज़न को अज़ान देते सुनो तो तुम भी वही शब्द दौहराओ जो वह कहता है फिर मुझ पर दरूद भेजो। जिस व्यक्ति ने मुझ पर दरूद पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस गुना रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा। फिर फ़रमाया- मेरे लिए अल्लाह तआला से वसीला (मध्यथता) मांगो यह जन्नत के स्तरों में से एक स्तर है जो अल्लाह तआला के बन्दों में से एक बन्दे को मिलेगा। और मैं आशा करता हूँ कि वह मैं ही हूँगा। जिस किसी ने भी मेरे लिए अल्लाह से वसीला (मध्यथता) मांगा उसके लिए शफ़ाअत(पापों के दंड से बचने के लिए प्रार्थना)हलाल हो जाएगी।

अतः यह दरूद जहां आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत में वृद्धि करता है वहीं दुआ की क़बूलियत के लिए भी आवश्यक है और अपनी मुक्ति के लिए भी आवश्यक है। हज़रत उमर रज़ी0 ने इसी लिए फ़रमाया है कि दुआ आसमान और ज़मीन के बीच ठहर जाती है और जब तक अपने नबी सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तुम दरूद न भेजो उसमें से कोई भाग भी ख़ुदा तआला के समक्ष पेश होने के लिए ऊपर नहीं जाता। दरूद पढ़ने के लिए कितना प्रयास होना चाहिए इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं, अपने एक अनुयायी को लिखते हुए, कि आप दरूद शरीफ़ के पढ़ने में अत्यधिक ध्यान लगाएं और जैसा कि कोई अपने प्यारे के लिए वास्तव में बरकत

चाहता है वैसी रूचि और निष्ठा से आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बरकत चाहें।

अतः हमें चाहिए कि व्यक्तिगत जोश पैदा करने का प्रयास करें। फिर दरूद शरीफ़ पढ़ने का कारण बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, एक स्थान पर, कि हमारे सैय्यद व मौला सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सत्यता एंव वफ़ा देखिए। आपने हर प्रकार के षडयन्त्रों का मुक़ाबला किया। विभिन्न प्रकार की कठिनाइयां झेलीं परन्तु परवाह न की। यह सत्य परायणता एंव वफ़ा थी जिसके कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल किया। इसी लिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا○ अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी नबी पर दरूद और सलाम भेजो।

फिर यह बयान फ़रमाते हुए कि दरूद शरीफ़ सत्य मार्ग की प्राप्ति तथा दुआ की स्वीकृति का एक साधन है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में अधिकता तथा उसके नवीनीकरण हेतु अर्थात मुहब्बत में बढ़ने के लिए तथा उसको ताज़ा करने के लिए हर नमाज़ में दरूद शरीफ़ का पढ़ना आवश्यक हो गया है ताकि इस दुआ की स्वीकृति के लिए दृढ़ता का एक साधन हाथ में आ जाए। दरूद शरीफ़ जो सुदृढ़ता प्राप्त करने का एक व्यापक साधन है, अधिकांशतः पढ़ो, न कि रस्म और आदत के तौर पर बल्कि रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्दरता एंव एहसान को सम्मुख रख कर तथा आपके उच्च स्तर और प्रतिष्ठा की उन्नति के लिए तथा आपकी सफलताओं के लिए। इसका परिणाम यह होगा कि दुआ की क़बूलियत का मीठा एंव स्वादिष्ट फल तुमको मिलेगा।

फिर आप फ़रमाते हैं- यह ज़माना कैसा मुबारक ज़माना है कि ख़ुदा तआला इन संकट के दिनों में केवल अपनी कृपा से (उन दिनों में आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ग़लत बातें की जाती थीं जब आपने यह इरशाद फ़रमाया) कि इन संकट के दिनों में केवल अपनी कृपा से आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता को प्रकट करने के लिए यह मुबारक निश्चय किया कि परोक्ष से इसलाम की सहायता का प्रबन्ध फ़रमाया तथा एक सिलसिले को स्थापित किया। उन लोगों से पूछना चाहता हूँ जो अपने दिल में इसलाम के लिए एक दर्द रखते हैं और उसका सज्ज्ञान एंव निष्ठा उनके दिलों में है कि क्या कोई ज़माना इससे बढ़कर इसलाम में आया है जिसमें इतने अपशब्द एंव अपमान आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम का किया गया हो और क़ुरआन का अपमान हुआ हो। फिर मुझे मुसलमानों की हालत पर बड़ा खेद और दिली रंज होता है और कई बार मैं इस दर्द से दुखी हो जाता हूँ कि इनमें इतनी अनूभूति भी शेष नहीं रही कि इस अपमान को अनुभव कर लें। क्या आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ भी मर्यादा अल्लाह तआला को मंज़ूर न थी जो इतने अपशब्दों पर वह कोई आसमानी सिलसिला स्थापित न करता।

अतः हमारा यह और भी अधिक कर्तव्य बन जाता है कि पहले से बढ़कर दरूद भेजें, आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर। अतः आपने यह फ़रमाया कि मुझे इस लिए भेजा गया है ताकि मैं आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की ,खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करूं। इसके आगे यह भी फ़रमाया आपने, और क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाइयों को दुनिया को दिखाऊं। अतः दरूद शरीफ़ को अधिकता से पढ़ना आज हर अहमदी के लिए आवश्यक है ताकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के उद्देश्य को भी हम पूरा करने वाले हों। ख़ुदा तआला की आवाज़ पर हम लब्बैक (मैं उपस्थित हूँ) कहने वाले हों। और आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत के दावे पर पूरे उतरने वाले हों। केवल नारों अथवा जलूसों से यह मुहब्बत का हक़ अदा नहीं होगा जो जमाअत से बाहर के मुसलमान करते रहते हैं इस मुहब्बत का हक़ अदा करने के लिए, आज हर अहमदी करोड़ों करोड़ दरूद और सलाम अपने दिल के दर्द के साथ मिला कर अर्श पर पहुंचाए। यह दरूद बन्दों की बन्दूक़ों की गोलियों से अधिक दुश्मन को नष्ट करने के काम आएगा। फिर और अधिक स्पष्ट करते हुए कि दरूद पढ़ने का तरीक़ा क्या है? आप फ़रमाते हैं कि दरूद शरीफ़ इस प्रकार न पढ़ें कि जैसे सामान्य लोग तोते की भांति पढ़ते हैं। न उनको आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ सम्पूर्ण निष्ठा होती है न वे मन की गहराई से अपने रसूल-ए-मक़बूल के लिए अल्लाह की बरकतें मांगते हैं बल्कि दरूद शरीफ़ से पहले यह धारणा सुनिश्चित कर लेनी चाहिए, फ़रमाया कि, आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्बंध इस स्तर पर पहुंच गया है कि कदापि अपना दिल यह न मान सके कि दुनिया के आरम्भ से लेकर अन्त तक कोई ऐसा मानव आया है जो इस मुहब्बत की भावना से अधिक मुहब्बत रखता था अथवा कोई ऐसा व्यक्ति आने वाला है जो इससे ऊपर होगा। इस आश्य से पढ़ना चाहिए कि ता ख़ुदा वन्द करीम अपनी कामिल बरकतें अपने नबी करीम पर नाज़िल करे और उसको सारे संसार के लिए बरकतों का स्रोत बना दे तथा उसकी बज़ुर्गी और शान व शौकत इस दुनिया और उस दुनिया में प्रकट करे। केवल यही उद्देश्य चाहिए कि अल्लाह की सम्पूर्ण बरकतें हज़रत रसूल-ए-मक़बूल सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हों और उसका जलाल दुनिया और आख़िरत में चमके।

अतः जब इस प्रकार यह दरूद शरीफ़ पढ़ा गया तो वह रस्म और आदत से बाहर है और निःसन्देह इसकी अदभुत किरणें प्रकट होंगी। फ़रमाया कि दरूद शरीफ़ वही उत्तम है जो आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से निकला है और वह यह है कि

اللھم صلی علی محمد و علی اٰل محمد کما صلیت علی ابراھیم و علی آل ابراھیم انک حمید مجید
اللھم بارک علی محمد و علی اٰل محمد کما بارکت علی ابراھیم و علی آل ابراھیم انک حمید مجید

अर्थात दरूद शरीफ़ की विभिन्न क़िस्मों से यही दरूद शरीफ़ अधिक मुबारक है। निष्ठा, मुहब्बत और मन तथा करुणा के साथ यह दरूद पढ़ना

चाहिए तथा उस समय तक अवश्य पढ़ते रहें कि जब तक एक दशा करुणामयी, लीनता एंव प्रभाव की उत्पन्न न हो जाए और मन में एक प्रकार का दर्द तथा श्रद्धा पाया जावे।

अल्लाह तआला यह रूह हम सब में पैदा करे। हमारे दिल से ऐसा दर्द निकले जो अर्श पर पहुंचे और हमें भी इसके कारण ठंडक प्राप्त हो। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हम में से अनेक ऐसे हैं जो दरूद पढ़ते हैं तथा बड़े दर्द के साथ पढ़ते हैं और अल्लाह तआला उन्हें इसके लाभ के दृश्य भी दिखाता है। अल्लाह तआला करे कि इस प्रकार दरूद पढ़ने वालों की जमाअत में संज़्या बढ़ती चली जाए जिसका लाभ जमाअत को भी होगा, जमाअत की प्रगति में भी होगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद का दरूद पढ़ने का तरीक़ा मुझे बहुत अच्छा लगता है यद्यपि हम में से कुछ लगभग उनकी भांति पढ़ते हैं परन्तु यह ढंग ऐसा है जो मैं आपके सामने भी रखना चाहता हूँ जिससे दर्द के साथ आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से निजि मुहब्बत में एक नए रंग की वृद्धि होती है तथा जमाअत की प्रगति के लिए भी दुआ का भाव उत्पन्न होता है। आपने फ़रमाय, एक स्थान पर, कि जब हम दूसरों के लिए दुआ करते हैं तो यह दुआ एक रंग में हमारे लिए भी दर्जे ऊंचे होने का कारण बनती है अतः जब हम दरूद पढ़ते हैं तो उसके परिणाम स्वरूप जहां रसूल करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्जे बुलन्द होते हैं वहीं हमारे दर्जों में भी उन्नति होती है और उनको इनाम मिलकर फिर उनके द्वारा हम तक पहुंचता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है कि जैसे जब छलनी में कोई वस्तु डालो तो वह उसमें से निकल कर नीचे जो कपड़ा पड़ा हो उसमें भी आ गिरती है। इसी प्रकार मुहज़्मद सलल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला ने इस उज़्ज़त के लिए एक छलनी की भांति बनाया है। पहले ख़ुदा उनको अपनी बरकतों से अंश देता है फिर वे बरकतें उनके द्वारा तथा उनके कारण हमें मिलती हैं। इसलाम का माना हुआ नियम है तथा कोई व्यक्ति इससे इंकार नहीं कर सकता कि दुआएं मरने वालों को अवश्य लाभ देती हैं।

अतः यह मार्ग कि जिससे बिना इसके कि कोई शिर्क वाली हरकत हो हम स्वंय भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं तथा क़ौम भी लाभान्वित हो सकती है अर्थात क़ौमी और व्यक्तिगत दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं, इस प्रकार दरूद पढ़ने तथा जवाब देने से। अतः यह ढंग ऐसा है जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ इसके कारण जमाअत की उन्नति के मार्ग भी खुलते हैं और जब जमाअत प्रगति करेगी, जब आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ने वालों की संज़्या में वृद्धि होगी तो विरोधियों की संज़्या भी घटती चली जाऐगी। इसके अतिरिक्त एक अन्य बात भी कहना चाहता हूँ। कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि اللھم صلی علی محمد और اللھم بارک علی محمد अलग अलग क्यूं हैं? तो इसके विषय में शब्द कोष में इस प्रकार व्याज़्या है कि शब्दावली के अनुसार अस्सलात का अर्थ अल-तअज़ीम भी है। अतः सारांश यह है कि اللھم صلی علی محمد में आपकी शरीअत के प्रभुत्व तथा सदा स्थापित रहने तथा उज़्ज़त के लिए आपकी शफ़ाअत से लाभान्वित होने की दुआ है और अल्लाहुज़्मा बारिक में आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के सज़्मान, महानता व शान तथा बज़ुर्गी के सदैव स्थापित रहने की दुआ है।

अल्लाह तआला हमें वास्तविक रंग में दरूद पढ़ने की क्षमता प्रदान करे और इस दरूद के कारण हम जहां ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने वाले हों वहीं आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में सदा उन्नति करते चले जाने वाले भी हों और आपकी शरीअत के फैलाने के काम में अपनी क्षमताओं को लगाने वाले हों। आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षानुसार दुनिया से उपद्रव को समाप्त करने के लिए अपनी भूमिका निभाने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुज़्अः के अन्त में हुज़ूर अनवर ने मुकर्रम मौलवी अब्दुल क़ादिर साहब देहलवी साहब दर्वेश मरहूम तथा मोहतरमा मुबारका बेगम साहिबा पत्नि मुकर्रम बशीर अहमद साहब हाफ़िज़ाबादी मरहूम का सुन्दर वर्णन फ़रमाते हुए दोनों शुभ गुणों तथा सेवाओं का वर्णन किया तथा जुमा की नमाज़ के बाद इन दोनों का जनाज़ा गायब पढ़ाया।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar Ayyadahullhu Ta'la 16.01.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....
.....
.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*